17 फरवरी 2015, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

संसार भावना में यह चिन्तन किया जाता है कि संयोगों में सुख नहीं है, संयोगों में सुख की कल्पना ही दु:ख का मूल है।
- बारह भावना : एक अनुशीलन, पृष्ठ 47

वर्ष : 37, अंक : 22 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
फरवरी (द्वितीय), 2015 (वीर नि. संवत्-2541) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में साप्ताहिक गोष्ठियों की श्रृंखला में दिनांक 31 जनवरी 2015 को **'नयचक्र : एक अनुशीलन'** विषय पर शास्त्री वर्ग की एक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में विशाल जैन पिड़ावा (शास्त्री द्वितीयवर्ष) ने प्रथम एवं ऋषभ जैन मौ व निखिल शाह मुम्बई (शास्त्री द्वितीय वर्ष) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। मंगलाचरण पीयूष जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने किया।

गोष्ठी का संचालन सौरभ जैन कोलारस एवं बाहुबली जैन दमोह (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने किया। ग्रंथभेंट एवं आभार प्रदर्शन पण्डित सोनूजी शास्त्री ने किया।

दिनांक 1 फरवरी 2015 को **'समयसार : एक अनुशीलन'** विषय पर शास्त्री वर्ग की एक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में पण्डित सुनीलजी शास्त्री प्रतापगढ मंचासीन थे।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में चर्चित जैन खनियांधाना (शास्त्री प्रथम वर्ष) ने प्रथम एवं अंकित जैन धार (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे। मंगलाचरण शाश्वत जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने किया।

गोष्ठी का संचालन अनुभव जैन सिलवानी एवं प्रियम जैन बड़ामलहरा (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने किया। ग्रंथभेंट एवं आभार प्रदर्शन पण्डित सोनूजी शास्त्री ने किया।

पंच परमेष्ठी विधान संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित जिनालय में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा जयपुर महानगर द्वारा की जाने वाली मासिक पूजन के अन्तर्गत दिनांक 8 फरवरी 2015 को पंच परमेष्ठी विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा प्रवचनसार की गाथा 6 पर प्रवचन का लाभ लगभग 300-350 साधर्मियों को मिला।

विधान के आयोजनकर्त्ता श्री अरुणकुमार नवीनकुमारजी पोद्दार फिरोजाबाद वाले जयपुर थे।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित सोनूजी शास्त्री ने संपन्न कराये।

आगामी कार्यक्रम...

सामूहिक बाल संस्कार शिविरों का आयोजन

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रभावना योग में ब्र.रवीन्द्रजी 'आत्मन्' के सानिध्य में ब्र.सुमतप्रकाशजी के निर्देशन में श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट भिण्ड एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा देवनगर भिण्ड के संयुक्त तत्त्वावधान में 11वें सामूहिक जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविरों का आयोजन दिनांक 7 मई से 16 मई 2015 तक किया जा रहा है। इस वर्ष मध्यप्रदेश के 7 जिलों भिण्ड, मुरैना, ग्वालियर, शिवपुरी, टीकमगढ, गुना, नरसिंहपुर में एवं उत्तरप्रदेश के 7 जिलों इटावा, औरया, मैनपुरी, फिरोजाबाद, एटा, झांसी, ललितपुर इसप्रकार 14 जिलों के 101 स्थानों पर शिविर लगाने का लक्ष्य है। अत: इसमें लगभग 175 विद्वानों की आवश्यकता है।

अतएव जो महानुभाव बालबोध भाग 1,2,3 व वीतराग विज्ञान भाग 1,2,3 व छहढाला आदि पढा सकते हैं, हमें मोबाईल नम्बर 09826646644 (डॉ. सुरेश जैन) या 9826472529 (पुष्पेन्द्र जैन) व ई-मेल : kksmt.bhd@gmail.com पर सूचित करने की कृपा करें।

अब... डॉ. भारिल्ल जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI
सुख, शान्ति, समृद्धि

जयपुर (राज.) : अखिल भारतीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के मर्मस्पर्शी प्रवचन अब जिनवाणी चैनल पर प्रात: 6.30 से 7 बजे तक नियमित दिखाये जायेंगे। यह क्रम एक वर्ष तक नियमित चलेगा। स्मरणीय है कि इसके पूर्व अहिंसा चैनल, साधना चैनल व जी-जागरण चैनल पर विगत 10 वर्षों से आपके नियमित प्रवचन प्रसारित किये जाते रहे हैं।

- अखिल बंसल,
महामंत्री-अ. भा. दि. जैन विद्वत्परिषद्

सम्पादकीय –

प्रो. ज्ञान का समर्पण

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

दूसरे ने कहा – ''सर ! लगभग यही स्थिति सब कक्षाओं की थी। हाँ में हाँ भराने के लिए दूसरे शिक्षकों की ओर मुँह करके कहा – ''क्यों थी न ?''

समवेत स्वर में सबने कहा –''हाँ, देखो न ! कितनी ठंड है ? हाथ भी बाहर नहीं निकाले जाते। भला ऐसे में पढाना...।''

''हाँ, सो तो है ही'' – प्राचार्य ने भी हाँ में हाँ मिला दी।

वे भी सबके साथ बैठकर अपने अखबारी ज्ञान का प्रदर्शन करते हुए राजनीति की चर्चा करने लगे।

शिक्षा संस्थान की गिरती हुई स्थिति और धूमिल होती हुई छवि की जानकारी जब भी किसी नागरिक द्वारा व्यवस्थापिका समिति को दी जाती तो वे संस्था या शिक्षकों के प्रति राग–द्वेष का परिणाम कहकर उसे टाल जाते थे।

इस विषय में उनका कहना था कि –''काम करने वालों को भलाई–बुराई तो झेलनी ही पड़ती है। धीरे–धीरे उनकी सोच भी इसी तरह की बन गई थी।''

प्राचार्य भी अपने बचाव के लिए ऐसा ही कुछ स्पष्टीकरण दे दिया करते थे।

पर जब शिकायतें सुनते–सुनते व्यवस्थापिका समिति के कान पक गये और पानी सिर से ऊपर पहुँच गया तो समिति ने सक्रिय होकर एक जाँच समिति की नियुक्ति कर दी।

फिर जाँच समिति की रिपोर्ट के अनुसार समिति द्वारा प्राचार्य और प्राध्यापकों को यह नोटिस दिये गये कि ''यदि छह मास के अन्दर स्थिति में सुधार नहीं हुआ तो पूरे विद्यालय परिवार पर कठोर कार्यवाही की जायेगी।

जिन मूल उद्देश्यों की पूर्ति के लिए शिक्षा संस्थान स्थापित किया गया है, यदि उनमें किंचित् भी उदासीनता बरती जायेगी तो सम्बन्धित व्यक्ति की तो बिना नोटिस दिये ही तत्काल प्रभाव से तुरंत सर्विस समाप्त कर दी जायेगी। यदि आवश्यक समझा गया तो विद्यालय भी बन्द किया जा सकता है और उससे हुई क्षति की जिम्मेदारी संस्था की नहीं होगी।

इसके सिवाय व्यवस्थापिका समिति ने प्रो. ज्ञान की संस्था के प्रति समर्पण की भावना, कर्तव्यनिष्ठा और छात्रों के प्रति हित की भावना देखकर उसे उपप्राचार्य पद पर पदोन्नत कर दिया।

जिन अध्यापकों को जाँच समिति द्वारा दोषी ठहराया गया था, उनकी तीन–तीन वर्ष तक के लिए वेतन वृद्धि रोक दी गई।

अध्यापकों को सुधरने का अवसर प्रदान करने हेतु एक विशेष आदेश यह भी दिया गया कि यदि उन्होंने एक वर्ष के अन्दर अपने चरित्र को सुधारकर स्वयं को शिक्षण में सक्षम और योग्य सिद्ध कर दिखाया तो उन्हें तीन–तीन अतिरिक्त वेतन वृद्धियाँ देकर प्रोत्साहित किया जायेगा।

अन्त में समिति के अध्यक्ष ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा –''काश ! ज्ञान जैसे समर्पित और ईमानदार व्यक्ति इस संस्था को मिलते रहें तो अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा। एक न एक दिन यह संस्था अवश्य ही अपने उद्देश्यों में सफल होगी।''

अध्यक्ष की भावनाओं का सम्मान करते हुए प्रो. ज्ञान की प्रशंसा में इसी आशय का एक प्रस्ताव पारित करके श्रेष्ठ कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित करने का अभिनन्दनीय कार्य भी व्यवस्थापिका समिति ने किया।

यह वही शिक्षा केन्द्र है, जो ईसाई मिशन के लोकप्रिय शिक्षा संस्थान के समानान्तर भारतीय संस्कृति व सभ्यता की सुरक्षा हेतु आध्यात्मिक विचार और अहिंसक आचरण के प्रति निष्ठा उत्पन्न करने हेतु नैतिकता और सदाचार के संस्कार डालने हेतु एवं पश्चिमी संस्कारों व दुर्व्यसनों से दूर रखने के पवित्र उद्देश्य से विज्ञान के पिता द्वारा दो दशक पूर्व स्थापित किया गया था।

इन्हीं उद्देश्यों से प्रभावित होकर नगर के श्रीमंतों ने भी लाखों रुपयों का योगदान इस संस्थान को दिया था। उसी के फलस्वरूप धीरे–धीरे यह संस्थान वट–वृक्ष की तरह बढा और नगर में ही नहीं, पूरे प्रदेश के सबसे बड़े और श्रेष्ठ शिक्षा संस्थान के रूप में पहचाना जाने लगा था।

प्रारम्भ में एक दशक तक, जबतक मूल संस्थापक सेठ लक्ष्मीकांत और उनके सहयोगी श्री अरहंत जैन रहे तब तक तो यह संस्थान अपने उद्देश्यों के प्रति जागरूक रहा; पर संस्थापक और सहयोगी श्री अरहंत जैन के दिवंगत होते ही गत कुछ वर्षों से इसकी छवि धूमिल होते–होते स्थिति यहाँ तक आ पहुँची कि अब उसकी चर्चा सुनते ही शर्म से आँखें नीचे झुक जाती हैं।

इस शिक्षाकेन्द्र के अन्तर्गत पहली कक्षा से लेकर स्नातकोत्तर स्तर तक कला, विज्ञान एवं वाणिज्य आदि सभी प्रमुख विषयों के पठन–पाठन की व्यवस्था है। (क्रमशः)

आत्मार्थी छात्रों के लिए अपूर्व अवसर

आत्मार्थी छात्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में रहकर चारों अनुयोगों के माध्यम से जैनधर्म का सैद्धान्तिक अध्ययन कर सकें तथा साथ ही संस्कृत, न्याय, व्याकरण आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान प्राप्त करें – इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य से जयपुर में विभिन्न ट्रस्टों के सहयोग से श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय चल रहा हैं, जिसमें पूरे देश के विभिन्न भागों से आये छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

अबतक 678 छात्र शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके शासकीय एवं अर्द्धशासकीय सेवाओं में रहकर विभिन्न स्थानों में तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं, जिनमें से 86 छात्र जैनदर्शनाचार्य की स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं। अनेक छात्र पी.एच.डी./नेट/ जे.आर.एफ. आदि भी कर चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रवेश पानेवाले छात्रों को जगद्गुरुरामानन्दाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय की जैनदर्शन (त्रिवर्षीय शास्त्री स्नातक) कोर्स की परीक्षायें दिलाई जाती हैं, जो पूरे देश में बी.ए. के समकक्ष हैं तथा सरकार द्वारा आई. ए. एस., कैट, मैट, जे.आर.एफ. जैसी किसी भी सर्वमान्य प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये मान्यता प्राप्त हैं।

शास्त्री परीक्षा में प्रवेश के पूर्व छात्र को दो वर्ष का राजस्थान शिक्षा बोर्ड का उपाध्याय परीक्षा का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है, जो हायर सैकेण्ड्री (12वीं) के समकक्ष है। इसप्रकार कुल 5 वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसके बाद यदि छात्र चाहें तो दो वर्ष का जैनदर्शनाचार्य का कोर्स भी कर सकते हैं, जो (एम.ए.) के समकक्ष है।

उपाध्याय में प्रवेश हेतु किसी भी प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सेकेण्डरी (दसवीं) परीक्षा विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान व अंग्रेजी सहित प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

यहाँ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित सोनूजी शास्त्री, पण्डित गोम्मटेश्वरजी चौगुले एवं पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री के सान्निध्य में छात्रों को निरंतर आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होता है।

सभी छात्रों को आवास एवं भोजन की सुविधा नि:शुल्क रहती है।

नया सत्र 1 जुलाई 2015 से प्रारंभ होगा। स्थान अत्यंत सीमित है; अत: प्रवेशार्थी शीघ्र ही अपना प्रार्थना-पत्र अंक सूची सहित जयपुर प्रेषित करें।

यदि दसवीं का परीक्षाफल अभी उपलब्ध न हुआ हो तो पूर्व परीक्षाओं की अंक सूची की सत्यप्रतिलिपि के साथ प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं।

दसवीं का परीक्षा परिणाम प्राप्त होते ही तुरंत भेज दें।

यदि प्रवेश योग्य समझा गया तो उन्हें **मेरठ में 24 मई से 10 जून, 2015 तक** होनेवाले ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर में साक्षात्कार हेतु बुलाया जायेगा, जिसमें उन्हें प्रारंभ से अन्त तक रहना अनिवार्य होगा।

पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

प्राचार्य, श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.) फोन :(0141) 2705581, 2707458, फैक्स - 2704127 Email-ptstjaipur@yahoo.com

क्यों लें महाविद्यालय में प्रवेश ?

1. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का सन् 1977 से 37 वर्षों का गौरवशाली इतिहास है।
2. यहाँ पूर्णत: धार्मिक परिवेश मिलता है, जिससे बालक संस्कारशील धर्मनिष्ठ बन जाते हैं।
3. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित सोनूजी शास्त्री, पण्डित गोम्मटेश्वरजी चौगुले, पण्डित ई.जिनकुमारजी शास्त्री आदि अनेक विद्वानों के सान्निध्य में सतत् प्रशिक्षण से जैनतत्त्वज्ञान/दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान बनते हैं।
4. पूरे देश में धार्मिक अवसरों पर प्रवचन/विधान आदि कार्यों के निमित्त भ्रमण के अवसर के साथ-साथ समाज के साथ रहने का प्रायोगिक ज्ञान सीखने को मिलता है।
5. जैनदर्शन के विद्वान होने से स्व के कल्याण के साथ-साथ अपने परिवार-समाज के कल्याण में निमित्त होते हैं।
6. छात्रावास में रहने से अपने हिताहित का स्वयं निर्णय करने की सामर्थ्य प्रगट होती है।
7. यहाँ विभिन्न प्रान्तों के छात्रों के साथ रहकर पूरी भारतीय संस्कृति का परिचय प्राप्त करने का अवसर मिलता है।
8. महाविद्यालय के छात्र औसतन प्रतिवर्ष राजस्थान बोर्ड तथा विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में मैरिट में स्थान प्राप्त करते हैं।
9. संस्कृत भाषा में शास्त्री (बी.ए.) की डिग्री राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की होने से अपेक्षाकृत रोजगार के अधिक उन्नत अवसर उपलब्ध होते हैं।
10. दर्शन व संस्कृत विषय के साथ आई.ए.एस. जैसी राष्ट्रीय प्रतियोगी परीक्षा व आर.ए.एस. आदि प्रान्तीय प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्णता के अवसर प्राप्त होते हैं।
11. छात्रों की वक्तृत्वशैली, तर्कशैली एवं अध्ययनशीलता का विशेष विकास होता है, जिससे छात्र अन्य क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

इसप्रकार श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश पाकर आपके बालक का सर्वांगीण विकास होता है। वह अपने और अपने परिवार, समाज की उन्नति में निमित्त होता है। जैनदर्शन का विद्वान बनकर स्व-पर कल्याण के सम्पादन हेतु अग्रसर होता है।

क्या आप नहीं चाहते कि आपका बालक भी ऐसा हो ? यदि हाँ.. तो महाविद्यालय में प्रवेश हेतु बालक को **दिनांक 24 मई से 10 जून 2015 तक मेरठ** में आयोजित शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में अवश्य भेजें।

-सोनू शास्त्री (09785643277)

फॉर्म मंगाने का पता : श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15, फोन-0141-2705581, 2707458

धर्म क्या, क्यों, कैसे और किसके लिए – *(छठी किश्त, गतांक से आगे)*

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

पिछले अंक में हमने पढा – ***दरअसल अपने वर्तमान के दुखड़ों में ही हम इतनी गहराई तक डूबे हुए हैं कि हमें अपने त्रैकालिक लक्ष्य के बारे में सोचने का अवकाश ही नहीं है, बस ! हमें तो अपने वर्तमान के झंझटों से निजात चाहिये, हर कीमत पर, इसी वक्त। धर्म का अवलम्बन हमें अपने वर्तमान दर्द की दवा नहीं दिखाई देता है––– यही कारण है कि हमारी भगवानों की लिस्ट में नित नए नाम जुड़ते जा रहे हैं और हम पाते हैं कि इन नये भगवानों के दरबार में पुराने स्थापित भगवानों की अपेक्षा ज्यादा भीड़ जुटती है, ज्यादा मन्नतें माँगी जाती हैं और ज्यादा चढावा आता है।***

अब आगे पढिये कि सच क्या है ? हम अपने भविष्य के प्रति सजग हैं या नहीं –

अपने इन वर्तमान कष्टों के निवारण के लिये हम इतने अधिक व्यग्र हैं कि इसके लिये हम कुछ भी करने को तैयार रहते हैं, कोई भी कीमत चुका सकते हैं, किसी के भी सामने नाक रगड़ने को तैयार हैं और किसी को भी भगवान मान सकते हैं; किसी नीमहकीम को, दरिद्री भिखारी को, यहाँ तक कि बेचारे निरीह जानवरों को और पेड़–पौधों तक को भी। हम इन सब पर कुछ भी न्यौछावर करने तक को तैयार हो जाते हैं, कुछ भी क्यों, सबकुछ तक, वह भी मात्र सुनी–सुनाई, मनगढंत कहानियों के आधार पर। हमें इतना भी विचार नहीं आता है कि ये बेचारे तो स्वयं ही अनंत दुखी, असहाय, अशरण और करुणा के पात्र हैं और कोई कुछ कर पाये या न कर पाये, पर ये तो हमारी क्या मदद कर सकते हैं ?

हमें लगता है कि एक बार, बस एक बार हमारे इस वर्तमान दु:ख से हमें मुक्ति मिल जाये फिर हम चैन से धर्मध्यान करेंगे पर ***''न तो नों मन तेल होगा और न ही राधा नाचेगी''।*** न कभी हमारे वर्तमान दु:ख और झंझट कम होंगे और न ही हमें धैर्य धारण करने के लिये अवकाश मिलेगा; क्योंकि एक तो हमारे दुखड़े कम नहीं अनंत हैं, फिर कभी कदाचित एक दु:ख कम होता सा प्रतीत होता हो तो दूसरे चार दर्द उभर आते हैं, भूख मिटती है तो नींद उभर आती है, नींद टूटती है तो घूमने–फिरने की तड़प पैदा होती हे, घूमते हुये थक जाता है तो फिर कुछ खाने को जी चाहता है, खाकर पेटभर जाता है पर मन नहीं भरता, लालसा में कुछ अधिक खा लेता है तो और चार नई मुश्किलें पैदा हो जाती हैं, इस तरह इन दुखों का सिलसिला कभी थमता नहीं और हमें अवकाश मिलता नहीं। यूं तो कभी भी ऐसा होने वाला ही नहीं है कि संसार में हमें कोई दु:ख–दर्द न हो पर कदाचित कभी ऐसा छद्म आभास हो ही जाये तब भी हम कहाँ पीछे रहने वाले हैं, ***तब हम दूसरे के दु:खों पर दु:खी होना शुरु कर देते हैं, करुणावान, दयालु और परोपकारी बनकर।***

आखिर महान बनने का शौक तो हमें भी है ही न !

अब करुणा को तो हम दु:ख मानते ही नहीं, करुणा को तो हम गुण मानते हैं और करुणावान को महान।

एक हिन्दी साहित्यकार ने लिखा है **''दूसरों के दु:ख को देखकर उत्पन्न होने वाले हमारे दु:ख को करुणा कहते हैं''**

इसप्रकार हम देखते हैं कि **करुणा तो कषाय का ही एक प्रकार है, यह तो आर्तध्यान है।**

जो जितना अधिक दयालु है वह उतना ही अधिक दु:खी है।

हमारा कमाल तो देखिये !

हम भगवान को दयानिधान समझते हैं, अब यदि भगवान दयालु हों तो जगत में सबसे अधिक दु:खी तो वे ही होंगे; क्योंकि जगत के दु:ख तो कभी कम हो नहीं सकते हैं, तब दया के कारण वे तो सदैव दु:खी ही रहेंगे; क्योंकि वे किसी के दु:ख दूर तो कर नहीं सकते हैं, कर सकते होते तो कर ही चुके होते न ? तब तो कोई दु:खी होता ही नहीं, तब वे करुणा करते भी किस पर ?

हमारी चर्चा का विषय तो यह था कि हम सदा ही वर्तमान की अपनी व्याधियों से व्यथित होकर उनसे छुटकारा पाने के लिये किसी न किसी सहारे की खोज में रहते हैं, जब कोई भी दृश्य शक्ति हमें ऐसा करने में असमर्थ लगी तो अपना मन रखने के लिये हमने एक ऐसी अदृश्य शक्ति की कल्पना की जो कदाचित ऐसा कर सके, जिसे हम भगवान के नाम से पुकारने लगे और **जिसके सामने गिड़गिड़ाने व भीख मांगने की प्रक्रिया को हमने पूजा–भक्ति नाम दे दिया।** ''दिल बहलाने को गालिब, ये ख्याल अच्छा है''

सचमुच ***हम अपनी कमजोरियों और अवगुणों को भी महिमामंडित करने में सिद्धहस्त हैं।***

क्या यह हमारा घोर अविवेक नहीं कि हम अपने तात्कालिक प्रयोजनों में ही इतने व्यस्त रहते हैं कि हमें अपने त्रैकालिक हितों का ख्याल ही नहीं रहता है ?

यदि हम इसी प्रकार अपने वर्तमान को क्षणभंगुर तात्कालिक प्रयोजनों के पीछे बलिदान करते रहेंगे तो कब और कैसे हम अपने अविनाशी कल्याण का उपक्रम कर पायेंगे ? क्या यह हमारे चिंतन का विषय नहीं होना चाहिये ?

महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि **क्या सचमुच हम इतने नादान हैं कि हम सिर्फ अपने आज में ही इतने उलझे रहें कि हमें अपने भविष्य की सुध ही न रहे ?**

अपने आसपास नजर दौड़ाने पर तो मुझे उल्टा यह नजर आता है कि हम मनुष्य सदा ही अपने भविष्य के बारे में ही चिन्तित रहते हैं और अपने भविष्य की चिन्ता और इन्तजाम के प्रयासों में अपने वर्तमान को भी चौपट कर डालते हैं।***पशुओं और मनुष्यों में एक बड़ा अंतर यह भी है कि एक तो मनुष्य जीवनभर अपने भूत (काल) के बोझे को ढोता हुआ अपनी शक्ति और सामर्थ्य का अपव्यय करता है और दूसरा सदा अपने भविष्य के प्रति***

असुरक्षा महसूस करता हुआ चिन्तित बना रहता है। इस मायने में पशु की चिन्ताएं मनुष्य की अपेक्षा अनन्तवाँ भाग ही है; क्योंकि न तो उसे अनादि भूतकाल से प्रयोजन है और न ही अनंत भविष्य की चिंता है। तब यह उल्टा आरोप कैसे कि ''हम अपने तात्कालिक प्रयोजनों में ही इतने व्यस्त रहते हैं कि हमें अपने त्रैकालिक हितों का ख्याल ही नहीं रहता है''?

आखिर हमारे ही उक्त दोनों ही परस्पर विरोधी कथनों में से कौनसा कथन सही है और कौनसा गलत ?

ऊपरी तौर पर देखने में भले ही हमें अपने उक्त दोनों कथन परस्पर विरोधी प्रतीत होते हों पर गहराई से विचार करने पर हमारा यह भ्रम दूर हो जायेगा और हम पायेंगे कि हमारे दोनों ही कथन अपनी-अपनी जगह पर सही हैं। इनमें सिर्फ वर्तमान और भविष्य के काल की मर्यादा की गणना का अंतर है।

यदि अपने उक्त कथनों की स्पष्टता के साथ व्याख्या की जाये तो हम पायेंगे कि -

हम अपने इस मनुष्य जीवन के भविष्य के बारे में तो सदा चिन्तित रहते हैं और भविष्य की चिंता और इंतजाम के फेर में सदा ही अपने वर्तमान को भी व्यथित बनाए रखते हैं पर हमारी यह चिन्ता सिर्फ इसी मनुष्य पर्याय के भविष्य तक ही सीमित है, इस मानव जन्म के बाद के भविष्य के प्रति हममें कदाचित किसी भी प्रकार की जागरूकता, गम्भीरता, चिन्ता या सरोकार दिखाई नहीं देता है। (यदि हम इस जीवन के बाद की चिंता करते भी हैं तो अपनी नहीं वरन अपने उन वंशजों की चिंता करते हैं जो न तो मैं हूँ और न ही सचमुच मेरे हैं) इसलिये यह कहना भी सही है कि हम वर्तमान में ही मग्न हैं और हमें भविष्य की कोई चिन्ता ही नहीं है। आखिर ऐसा क्यों ?

यदि हम भविष्य के प्रति जागरूक हैं तो हमें अपने अगले भव का विचार क्यों नहीं आता और यदि हम सिर्फ वर्तमान में जीने वाले स्वभाव के हैं तो अपने इसी जीवन के आगामी काल (जो कि अत्यंत अनिश्चित है) की चिंता भी क्यों ?

इसके मायने बिलकुल साफ है कि हमें दृश्य की चिंता (विचार) होती है; क्योंकि हमें उसी का भरोसा होता है, अदृश्य का हमें भरोसा ही नहीं होता है और इसीलिये हमें उसका विचार भी नहीं आता है और चिंता भी नहीं होती है, हम उसके प्रति गंभीर नहीं होते हैं।

अपने इस जीवन का आगामी काल और अपनी आगामी पीढी (हालांकि यह हम स्वयं नहीं हैं) भी हमें हमारी कल्पना में स्वीकृत है इसलिये हम उनकी चिंता भी करते हैं और इंतजाम भी; पर इस जीवन के बाद हमारे अपने अस्तित्व का भी असंदिग्ध (संशय रहित) भरोसा हमें नहीं है, बस इसलिये उसके प्रति हमारा रवैया भी लापरवाहीभरा होता है। यदि हमें इस जीवन के बाद भी अपने अस्तित्व के बारे में संशय रहित विश्वास हो तो हम उसके लिये कुछ भी न करें और उसके प्रति लापरवाह बने रहें यह सम्भव ही नहीं। **(क्रमशः)**

प्रवेश प्रारंभ

नागपुर (महा.) : यहाँ स्थित श्री महावीर विद्या निकेतन के अन्तर्गत कक्षा 8वीं से 12वीं तक पाँच वर्षीय पाठ्यक्रम संचालित है, जिसका अष्टम् सत्र 20 जून 2015 से प्रारम्भ होने जा रहा है। इसमें प्रवेश हेतु 5 अप्रैल 2015 तक प्रवेश फार्म जमा कराकर 23 से 26 अप्रैल तक आयोजित चार दिवसीय प्रवेश पात्रता (साक्षात्कार) शिविर में पधारें। कक्षा 7वीं में 60% से अधिक अंक होना आवश्यक है।

प्रवेश फार्म **www.vidyaniketan.weebly.com** से अथवा नागपुर कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं। इस वर्ष मात्र 15 छात्रों को ही प्रवेश दिया जायेगा। **संपर्क सूत्र –** श्री महावीर विद्या निकेतन, नेहरू पुतला के सामने, इतवारी, नागपुर - 440022 (महा.) 9373005801, 9860140111, 7588740963, 8087216959 (मनीष जैन सिद्धांत-अधीक्षक)

शोक समाचार

(1) मलकापुर (म.प्र.) निवासी इंजी. श्री विनोदजी निरखे के पिताजी **श्री प्रेमचंदजी निरखे** का दिनांक 4 फरवरी 2015 को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे। टोडरमल स्मारक द्वारा संचालित गतिविधियों में अनन्य सहयोगी थे।

(2) सागर (म.प्र.) निवासी **श्री लक्ष्मीचंदजी जैन** का दिनांक 12 फरवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आपने वर्षों तक टोडरमल स्मारक में रहकर स्वाध्याय का नियमित लाभ लिया।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दुःखों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

प्रवेश प्रारंभ

कोटा (राज.) : बालकों में लौकिक शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक व नैतिक संस्कारों का बीजारोपण करने हेतु 'सन्मति संस्कार संस्थान' प्रारंभ किया गया है। इसमें कक्षा 8वीं व 9वीं कक्षा के बच्चों को प्रवेश दिया जायेगा। संस्थान में बच्चों को प्रवेश दिलाने हेतु 20 मार्च 2015 तक प्रवेश फार्म भरकर डाक द्वारा या ई-मेल **dharmaytankota@gmail.com** पर भिजवायें। प्रवेश फार्म फेस बुक में **Dharmayatyan Kota** खोलकर **Photo Pages** में जाकर डाउनलोड कर सकते हैं अथवा संस्थान से मंगवा सकते हैं।

बच्चे को प्रवेश दिलाने हेतु दिनांक 28-29 मार्च 2015 को लगने वाले शिविर में साक्षात्कार के लिये अवश्य लायें, आने की अग्रिम सूचना अवश्य देवें।

कोटा में कोचिंग करने वाले बच्चों को भी संस्थान में आवास एवं भोजन की सुविधा है एवं कोटा में कहीं भी रहने वाले बच्चों/अतिथियों को जैन भोजन करने एवं टिफिन भिजवाने की व्यवस्था भी है। विशेष जानकारी हेतु **संपर्क करें –** पण्डित जयकुमार जैन (09414310096), शनि शास्त्री (07877624215), चेतन जैन (09413109096)। **साक्षात्कार हेतु पता** - प्लाट नं. 24, महावीर कॉम्प्लेक्स, दिगम्बर जैन नसियां जी के पास, दादाबाड़ी, कोटा (राज.)।

दृष्टि का विषय

10 तृतीय प्रवचन –डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

पूजा-पाठ आदि में पिछले दस सालों में बहुत-सी अनावश्यक क्रियाएँ होने लगी हैं। जैसे - प्रतीक चढ़ाना! आठ द्रव्यों में प्रतीक का कहीं नाम ही नहीं है। ये सब क्रियाएँ तो अभी शुरू हुई हैं और आगे चलकर लोग इन्हें अनादि कहने लगेंगे।

आजकल तो मन्दिर भी चढ़ाने लगे हैं, भगवान की मूर्ति भी चढ़ा देते हैं। धीरे-धीरे कालान्तर में इनके भी अष्टक बन जाएँगे और आठ द्रव्य की जगह नौ द्रव्य हो जाएँगे। 'प्रतीकं निर्वपामीति स्वाहा' ऐसा भी कहा जाने लगेगा। ये सब मात्र पैसे के लिए ही तो हो रहा है।

आजकल हर चीज को रुपया-पैसा नामक द्रव्य से ही जोड़ा जाने लगा है; क्योंकि लोगों की दृष्टि इसी द्रव्य पर निरन्तर रहती है।

ऐसा ही हमारे देश के साथ हुआ है, भारत देश जब १९४७ में स्वतंत्र हुआ था; तब सर्वप्रथम यह कहा गया था कि देश में शराबबन्दी होनी चाहिए। उसके उत्तर में कहा गया था कि शराब को यदि एकदम बन्द कर देंगे तो जिन लोगों को शराब पीने की आदत है, वे तो बिना शराब के बेहोश हो जाएँगे; इसलिए इस शराब को बन्द करने के लिए इस पर भारी कर (टैक्स) लगाते हैं, उससे जो पैसा आएगा, वह शराब नहीं पीनेवालों के काम आएगा। शराब पर जब भारी कर लगेगा तो लोग अपने आप ही शराब पीना छोड़ देंगे। यदि शराब की एक बोतल की कीमत एक रुपए है तो उस पर दस रुपए कर लगाकर उसे ग्यारह रुपए में बेचेंगे तो जो दस रुपए की आय होगी, उसे देश के विकास में लगाएँगे। इसप्रकार जब-जब भी शराबबन्दी की बात आई, तब-तब शराब पर कर बढ़ता गया और वह पाँच रुपए की शराब की बोतल २०० रुपए की हो गई।

किन्तु शराब का पीना लोगों ने नहीं छोड़ा, बल्कि घर-घर में शराब पी जाने लगी और सभी लोग शराबी हो गए। स्वतंत्रता के ५० वर्षों बाद, फिर ये कहा गया कि शराबबन्दी लागू करो तो देखा कि सरकार की साठ प्रतिशत आय तो उसी से है। यदि शराबबन्दी कर देंगे तो सरकार फैल हो जाएगी। शराब बेचने वाले बड़े-बड़े उद्योगपति बन गए हैं। उनमें करोड़ों रुपया चन्दा देने की ताकत खड़ी हो गई है। वे उद्योगपति प्रत्येक मंत्री को जिताने के लिए जीप-गाड़ियाँ दौड़ाते हैं। उनके पैसों से जीते नेता लोग शराब बन्द कैसे कर सकते हैं ?

अब शराबबन्दी करने से न केवल सरकार का बजट गड़बड़ा जायेगा; अपितु नेताओं के आर्थिक स्रोत भी छिन्न-भिन्न हो जावेंगे।

इसप्रकार जिस चीज को आय से जोड़ दिया जाता है, उसे हटाना बहुत मुश्किल है। उसीप्रकार प्रतीक नहीं चढ़ाएँगे तो पैसा कहाँ से आएगा? प्रतीक की ही भाँति आजकल हजारों खोटी प्रवृत्तियाँ पैदा हो गई हैं।

जैसे - विधानों में भगवान की माता का दरबार लगना, इन्द्रसभा, राजसभा का होना, विधानों में पालना झूलन का होना, भगवान का झूला होना। इसप्रकार हमारी आँखों के सामने ही बहुत सी खोटी प्रवृत्तियाँ पैदा हो गई हैं और होती जा रही हैं।

इसप्रकार इन २००० वर्षों में आचार्य कुन्दकुन्द से लेकर आजतक न मालूम कितनी विकृतियाँ उत्पन्न हो गई हैं। **मन्दिर में भगवान के सामने नाचना, उछलना - ये भी धर्म में सम्मिलित हो गया है।** इन विकृतियों के उत्पन्न होने का एक प्रमुख कारण विद्वानों के गले का अच्छा होना है। यदि अच्छा गला नहीं होता तो ये विकृतियाँ भी नहीं होतीं। **(क्रमशः)**

आचार्य धरसेन दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय में -

प्रवेश हेतु अपूर्व अवसर

कोटा (राज.) : आचार्य धरसेन दि.जैन सि.महाविद्यालय के 8वें सत्र का शुभारंभ 25 जून से हो रहा है। महाविद्यालय में 10वीं कक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। छात्रों को जैनधर्म के सिद्धांतों के अध्ययन के साथ माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की वरिष्ठ उपाध्याय (12वीं) एवं राज. संस्कृत विश्वविद्यालय की शास्त्री (बी.ए.समकक्ष) डिग्री पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है। छात्रों के लौकिक विकास हेतु अंग्रेजी, विज्ञान एवं कम्प्यूटर की शिक्षा भी प्रदान की जाती है।

यहाँ छात्रों के आवास, भोजन एवं शिक्षा की संपूर्ण व्यवस्था नि:शुल्क रहती है। जो भी छात्र प्रवेश इच्छुक हों वे निम्न पते से पत्र या फोन द्वारा प्रवेश फार्म मंगा सकते हैं। प्रवेश-प्रक्रिया 24 मई से 10 जून 2015 तक मेरठ में लगने वाले प्रशिक्षण शिविर के दौरान संपन्न होगी।

संपर्क - पण्डित धर्मेन्द्र शास्त्री (प्राचार्य), मो. 8104615220, बजाज पैलेस, नगर परिषद कॉलोनी, छावनी, कोटा (राज.); पण्डित रतन चौधरी (निदेशक), मो. 9828063891, 8104597337; **फार्म मंगाने का पता -** 565, महावीर नगर प्रथम, कोटा (राज.) 324005

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

20 से 22 फरवरी	जयपुर (राज.)	वार्षिकोत्सव
1 मार्च	जयपुर (राज.)	महाविद्यालय विदाई समारोह
8 मार्च	जयपुर	सेमीनार
2 से 6 अप्रैल	विदिशा (म.प्र.)	पंचकल्याणक
12 अप्रैल	दिल्ली	उपकार दिवस व मुमुक्षु मण्डल दिल्ली का स्वर्ण जयंती समारोह
17 से 21 अप्रैल	मंगलायतन	गुरुदेवश्री जयन्ती
26 अप्रैल से 2 मई	सोलापुर	इन्द्रध्वज विधान
17 से 22 मई	पारले (मुम्बई)	पंचकल्याणक
24 मई से 10 जून	मेरठ	प्रशिक्षण-शिविर
11 जून से 15 जुलाई	विदेश	तत्त्वप्रचारार्थ

अवश्य पधारिये ! ।। श्री महावीराय नमः ।। धर्मलाभ लीजिए !!

दसवें तीर्थंकर श्री शीतलनाथ स्वामी के चार कल्याणकों से पवित्र ऐतिहासिक नगरी विदिशा में
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर एवं तीर्थधाम मङ्गलायतन, अलीगढ के तत्त्वावधान में
आध्यात्मिकसत्पुरुष पूज्य श्रीकानजीस्वामी की 125वीं जन्म जयंती वर्ष के समापन अवसर पर आयोजित

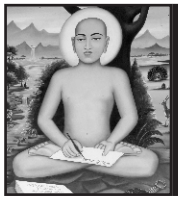

श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव

बुधवार, 1 अप्रैल से सोमवार, 6 अप्रैल 2015 तक

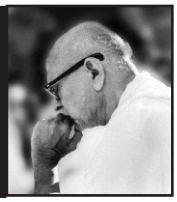

अग्रिम आमंत्रण पत्रिका

परमादरणीय जिनधर्मवत्सल–तत्त्वपिपासु–साधर्मीजन,

सादर जयजिनेन्द्र एवं शुद्धात्म वंदन !

श्री तीर्थंकर भगवन्तों एवं श्री कुन्दकुन्दादि सन्तों की सत्वानुकम्पा से तथा पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रभावना योग से आर्यखण्ड में निरन्तर वीतराग शासन का जयघोष हो रहा है। साक्षात् अरहंत देव के विरह के बावजूद आज भी भव्य जीव, उनकी प्रतिकृति की विधिपूर्वक स्थापना कर उनके साक्षीभूत होने के सदृश पुण्य अर्जित कर रत्नत्रय का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं।

इसी मंगलमार्ग को सुगन्धित करने का लोकोत्तम कार्य जैनरत्न वाणीभूषण पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा की प्रेरणा से सम्पूर्ण देश में और श्री कुन्दकुन्द नगर सोनागिर सिद्धक्षेत्र की स्वर्णिम भूमि के पश्चात् ऐतिहासिक नगरी विदिशा की पुण्यधरा पर एक विशाल भव्य शिखरबद्ध श्री कुन्दकुन्द–कहान स्वाध्याय मंदिर सहित श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जैन परमागम मंदिर का निर्माण पूर्णता की ओर है और मंगल धड़ी आ चुकी है कि आप और हम सभी साधर्मीगण दिनांक 1 से 6 अप्रैल 2015 तक श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव की मंगलमय प्रभावना के प्रत्यक्ष साक्षी बनकर चैतन्य महल में सम्यक्त्व का सुप्रभात करेंगे।

विदिशा नगरी का यह पंचकल्याणक महज एक प्रभु की प्रतिष्ठा ही नहीं अपितु आदि प्रभु व अनादि प्रभु के सम्पूर्ण ज्ञान वैभव का प्रतिनिधित्व करती एक विशाल ज्ञान प्रदर्शनी के रूप में प्रस्तुत होगा। राजसभा हो या इन्द्रसभा, मंच हो या पाण्डाल, जुलूस हो या सांस्कृतिक कार्यक्रम, पंचकल्याणक का हर अवयव, नूतन परिवेश के साथ चारों अनुयोगों को स्थापित करता हुआ अध्यात्म जगत का स्वर्णिम पृष्ठ बनेगा। आप सभी साधर्मियों की मंगल उपस्थिति से विदिशा नगरी की पावन धवलधरा मुखरित हो जाये यही हमारा भावभरा यथेष्ट मनोरथ है। आपके पधारने से प्रतिष्ठा महोत्सव के वैभव एवं एकता में अभिवृद्धि होगी। आज ही आरक्षण फार्म भरकर अपना स्थान सुरक्षित करा लें, जिससे आपके आवास व भोजनादि की समुचित व्यवस्था का सौभाग्य हमें प्राप्त हो सके।

विशेष :– इस महामहोत्सव में आप गरिमामयी सौभाग्यशाली पदों को ग्रहणकर अपूर्व पुण्यलाभ अर्जित कर सकते हैं।

निर्देशक
वाणीभूषण पं.ज्ञानचंदजी जैन, विदिशा

प्रतिष्ठाचार्य
ब्र.अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री

मंच निदेशक
पं. संजयकुमारजी शास्त्री
अलीगढ

विशिष्ट विद्वत्समागम
डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, जयपुर
डॉ. उत्तमचंदजी, छिन्दवाड़ा
पं. विमलचंदजी झांझरी, उज्जैन
पं. राजेन्द्रकुमारजी, जबलपुर
डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर

अध्यक्ष
श्री अजितप्रसादजी जैन, दिल्ली

कार्याध्यक्ष
डॉ.आर.के.जैन, विदिशा

महामंत्री
डॉ. मुकेशजी शास्त्री 'तन्मय', विदिशा

संयोजक
पं. लालजीराम जैन, विदिशा

सम्पर्क सूत्र :

श्री पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति

पो.बा.नं.26, ज्ञानानन्द निवास, किला अन्दर, विदिशा (म.प्र.) 464001

मो.: 09425638251, 09407594996, ई–मेल : panchkalyanak.vds@gmail.com

17 फरवरी 2015, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के संबंध में उनके समकालीन मनीषियों द्वारा व्यक्त किये गये हृदयोद्गार –

धवल शास्त्रों के सह-सम्पादक पण्डित हीरालालजी सिद्धान्तशास्त्री, ब्यावर श्री कानजीस्वामी के प्रति गद्गद् भाव से अपने हार्दिक उद्गार प्रगट करते हैं –

''उनमें समुद्र-सी गम्भीरता और सुमेरु-सी स्थिरता है; जो उनके बड़प्पन की द्योतक है। उनके मानस, वाणी और कार्य में एकरूपता है; जो कि उनके महात्मापने की सूचक है और उनकी प्रशान्त एवं सौम्यमुद्रा उनके आंतरिक प्रशमभाव को प्रगट करती है।

मैंने देखा कि वे जिस दृढता के साथ अध्यात्म तत्त्व का प्रतिपादन करते हैं, उतनी ही सरलता के साथ समागत बन्धुओं के साथ बातचीत भी करते हैं। उनकी प्रवृत्तियों से उनके प्रशम, संवेग, आस्तिक्य, अनुकम्पा आदि भावों की छाप हृदय पर सहज में ही अंकित हो जाती है। अधिकांश जैन समाज धर्म साधन करते एवं पुण्य कार्यों को सम्पादित करते हुए भी अपनी उस चिरकालीन भूल को नहीं समझ सका था, जिसके कारण कि वह आज तक भव-वन में भटकता आ रहा है। आपने लोगों की उस 'मूल में भूल' को बतला कर उन्हें सही दिशा का ज्ञान कराया है और करा रहे हैं।

जिसने कभी अध्यात्म की चर्चा नहीं सुनी ऐसे अनेक जैनेतर व्यक्ति भी आपके आध्यात्मिक प्रवचन सुनकर अध्यात्म गंगा में गोते लगाने लगते हैं। मैंने अपने जीवन में ऐसा प्रभावशाली अनोखा व्यक्तित्व अन्यत्र कहीं नहीं देखा।''

हार्दिक बधाई

(1) टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित नवीनजी पोद्दार जयपुर के लघु भ्राता **चि. नीलेश पोद्दार** पुत्र श्री अरुणकुमारजी पोद्दार का विवाह दिनांक 25 जनवरी को **सौ. गरिमा** के साथ संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये; अत: जैनपथप्रदर्शक एवं टोडरमल महाविद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

(2) टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित निलयकुमारजी शास्त्री पुत्र श्री चक्रेशकुमारजी जैन सागर ने राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली द्वारा दिनांक 17 से 27 दिसम्बर 2014 तक आयोजित **यूथ कॉम्पटीशन** शृंगेरी में शतरंज प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। इसके पश्चात् दिनांक 6 से 9 जनवरी 2015 तक आयोजित **ऑल इण्डिया इंटर संस्कृत युनिवर्सिटी यूथ कॉम्पटीशन** अगरतला (त्रिपुरा) में पुन: शतरंज प्रतियोगिता में केरल, कर्नाटक, गुजरात व असम को हराकर स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

(3) मुम्बई निवासी **सौ. सोनल फतेहलाल टाया** का शुभविवाह **चि. अर्पित हीरालाल बरदा** मुम्बई के साथ दिनांक 26 जनवरी को संपन्न हुआ। एतदर्थ जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

(4) कोलकाता निवासी **चि. हर्षित जैन** का शुभविवाह **सौ. निकिता जैन** के साथ दिनांक 18 जनवरी को संपन्न हुआ। एतदर्थ जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

इस उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक एवं टोडरमल महाविद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 13 फरवरी 2015

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा,** एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127